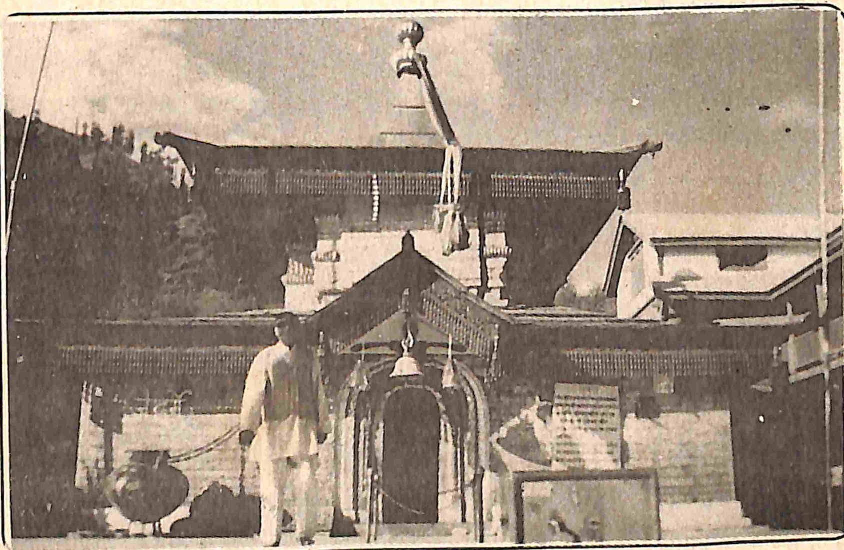
संस्मरण

एक अविस्मरणीय हाटकोटी यात्रा

☐ डॉ० बी० एन० कल्ला

हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, शिमला के पूर्व सचिव तथा राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भूपाल के परियोजना समन्वयक डॉ० बंशीलाल शर्मा से 24-10-97 को जम्मू के संकेत पर मुझे पत्र मिला। पत्र का विषय इस प्रकार था - "इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय" भोपाल (म० प्र०) के तत्त्वावधान में हाटकोटी ज़िला शिमला में दिनांक 13 नवम्बर, 1997 से 20 नवम्बर, 1997 की अवधि में निम्नलिखित विषयों पर दो कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। स्थानीय लिपियों तथा प्राचीन भाषाओं एवं जनजातीय भाषाओं में लेखन। काष्ठ शिल्पकारों का शिविर तथा कार्यशाला। इसमें भाग लेने के लिए सांचा विद्या, टाकरी, शारदा जनजातीय भाषाओं तथा दुर्लभ पाण्डुलिपियों के अनुवादकों तथा विशेषज्ञों को सहयोजित किया जाएगा।



यह पत्र पढ़कर मुझे हाटकोटी जाने की इच्छा हुई। आठ साल से कश्मीर से विस्थापित होने के बाद मैं गगनचुम्बी हिमाच्छादित चोटियों को पुनः देखना चाहता था अतः मैंने तत्काल कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए अपनी अनुमति भेज दी। मेरे साथ जम्मू से डॉ० मधुकर मारवा भी था। कार्यक्रम के अनुसार मैं ने जम्मू से दस नवम्बर 1997 को सांय आठ बजे डीलक्स बस से हाटकोटी के लिए प्रस्थान किया। 11 नवम्बर को सांय मैं शिमला पहुंचा। शिमला में 'अकादमी' के कार्यालय में ठहरने के लिए व्यवस्था की गई थी। 'अकादमी' का कार्यालय पहाड़ी पर स्थित है। यहां तक पहुंचने में काफी चढ़ाई है। चढ़ते चढ़ते मेरा सांस भी फूल गया। अन्ततः मैं अपने मित्र के साथ सांय नौ बजे वहां पहुंचा। अकादमी का चौकीदार मतिराम मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने मुझे एक कमरे में बिठाया। कमरा बहुत सर्द था, उसने अंगीठी जलाई, मेरी सर्दी इससे कम होने लगी। आठ साल के बाद मुझे नवम्बर की शीत काफी महसूस होने लगी। कमरे की खिड़कियां बन्द थीं। उनमें शीशे लगे हुए थे। शीशों से मैंने झांका, वहां साथ की पहाड़ी पर बर्फ पड़ी हुई थी। उसे देखकर मुझे हर्ष हुआ। ऐसा मालूम हुआ कि मैं श्रीनगर में अपने घर के चौथे मंज़िल पर बैठकर शंकराचार्य की बर्फानी पहाड़ी का दृष्य देख रहा हूं। दो-तीन क्षण टकटकी बांधकर उसकी ओर देखने लगा। कश्मीर के अतीत मधुर क्षण याद आ गये। आखिरकार गर्म पानी से नहाकर मैंने खाना खाया और सो गया। दूसरे दिन प्रातः उठकर श्री मति राम ने नाश्ता तैयार किया। अपना नित्यनियम तथा नाश्ता करके मैं 'हाटकोटी' जाने के लिए तैयार हुआ। मति राम मेरे साथ 'बस स्टैंड' तक आ गये। मेरी 'अटैची' उठाकर उसने मुझे बारह बजे के करीब बस में बिठाया। सांय 5 बजे मैं हाटकोटी पहुंचा। हाटकोटी की सड़क से नीचे उतर कर मुझे लगभग दो फर्लांग तक पैदल जाना पड़ा।

वहां डॉ० वंशी राम, राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भूपाल के संग्रहालयाध्यक्ष (Curator) श्री सोम नाथ जी तथा हिमाचल प्रदेश के जाने माने प्रो० अरुण जी आदि महान विभूतियां पहले ही पहुंची हुई थीं। हाटकोटी की बड़ी धर्मशाला में आगन्तुकों के

थी। कश्मीरी युवक श्रीनगर में गलियों और बाज़ारों में पहरा दे रहे थे। उन्होंने कितने ही पठानों को पकड़ कर सैना के हवाले कर दिया था। यदि उसी समय जनमत हो जाता तो आज पाकिस्तान और उग्रवादी जो जनमत का नारा लगाते हैं, वह नहीं लगता।

महाराजा हरि सिंह नहीं चाहते थे कि भारत पाकिस्तान के आक्रमण के विरोध में सुरक्षा परिषद में जाए। होना तो यह चाहिए था कि पाकिस्तानी सैना और पठानों को बाहिर निकाल दिया जाता। उधर सुरक्षा परिषद में सब कुछ विपरीत हुआ। उसने आक्रमण की बात को छोड़ कर यह निर्णय लिया कि देखना यह चाहिए कि कश्मीर को भारत के साथ रहना है या पाकिस्तान के साथ। उसके लिए राज्य में जनमत लिया जाए। सुरक्षा परिषद में सिवा इसराईल के किसी ने भी भारत के पक्ष में मत नहीं दिया। भारत सरकार की राजनीतिक उपयुक्तता की विपटता का प्रमाण सामने आ गया। उसके बाद राज्य का युद्ध विराम रेखा द्वारा विभाजन हो गया जिस से राज्य के दो टुकड़े हो गये और यह खण्ड जिसे पाकिस्तान ने हमला कर अपने अधिकार में कर लिया था। पाकिस्तान का अंग बना जो आजाद कश्मीर कहलाता है।

महाराजा हरि सिंह के प्रथम पांच वर्षों को राज्य का स्वर्णयुग कहा जा सकता है। सब जगह सुख शान्ति थी। कहीं कोई उपद्रव नहीं हुआ था। हिन्दुओं और मुसलमानों में कभी तनाव पैदा नहीं हुआ था। महाराजा ने कुछ योजनाएं बनाईं और उन्हें कार्यान्वित भी किया। श्रीनगर में बाहिर से आने वाले पर्यटकों के लिए कई प्रबन्ध किए। श्रीनगर में डल गेट से मुगल उद्यानों तक बुलवर्ड राज मार्ग तैयार हुआ और पर्यटक विभाग की स्थापना की गई। सभी पर्यटक स्थलों और उद्यानों को संवारा गया।

महाराजा ने ब्रिटिश सरकार के सामने घुटने टेकने की नीति नहीं अपनाई। जम्मू में ब्रिटिश रेजीडैंट का कार्यालय बन्द कर दिया और उसे सियाल कोट में स्थापित किया। अंग्रेज कश्मीर में पर्यटकों के रूप में ही आते रहे। उनके प्रशासन के कुछ ही समय उपरान्त श्रीनगर में जेहलम नदी में बड़ी भारी बाढ़ आई। नदी बांध तोड़ नगर में घुस आई। महाराजा महल से निकल कर बाहिर आ गये। उन्होंने सैना और पुलिस की सहायता से बांध पुनः खड़ा किया। स्वयं दरिया नौका पर सवार होकर लोगों को सहारा देने के लिए घूमते भी रहे।

महाराजा ने बच्चों में सिगरेट पीने की कुप्रथा हटाने के लिए एक कानून भी पास किया। इसके साथ साहुकारों के दमन से जकड़े गरीब लोगों के लिए साहुकारा कानून भी जारी किया जिस से कर्ज़ों में दबे कई लोगों को राहत मिली।

कश्मीर नरेश ने राजाओं की पूर्व प्रथा को चलाये रखा। उन्हें मिलने की किसी को मनाही नहीं थी। इसके लिए किसी को अधिक समय की प्रतीक्षा भी नहीं करनी पड़ती थी। महाराजा का जन सम्पर्क भी सराहनीय था। इन में विशेष बातें यह हैं कि पूर्व समय में बनी उन मस्जिदों की मलकीयत (आधिपत्य) राजा के पास था, कारण वह मस्जिदें हिन्दू राजाओं ने बनाई हुई थी। इस पर उन्हें कहा गया कि वह मस्जिदें मुसलमानों को दे दी जाएं। वही किया गया। सभी मस्जिदें उन्हें सौंप दी गईं। इनमें जम्मू के मस्तगढ़ की बड़ी मस्जिद और बाहुफोर्ट की मस्जिद उल्लेखनीय हैं। कुछ कश्मीर में भी इसी प्रकार हुआ। जम्मू में मुसलमानों के पास ईद के अवसर पर नमाज़ पढ़ने के लिए खुला स्थान नहीं था, और न उनके इस्लामिया हाई स्कूल के लिए बड़ी इमारत। महाराजां ने उनकी दोनों मांगें स्वीकार कर ली।

सबसे बड़ी मांग जिसे नरेश ने स्वीकर किया, वह राज्य में विधान सभा की स्थापना थी। यह मांग 1935 के दौरान पूरी हुई और उसी वर्ष चुनाव भी अमल में लाए गये। विधान सभा का नाम हिन्दी भाषा में प्रजा सभा रखा गया और मंत्रिमण्डल का 'आमात्यमण्डल' जबकि स्पीकर का नाम प्रमुख रखा गया। प्रजा सभा की स्थापना पर कश्मीर की मुस्लिम कान्फ्रैंस सन्तुष्ट नहीं हुई। इस के प्रधान शेख अब्दुल्ला का विरोध इस बात पर था कि उसमें मनोनीत सदस्यों की संख्या अधिक है। इसके विरोध में 'आज़ाद असैम्बली' का नारा लगाना आरम्भ हो गया। कुछ भी हो जम्मू-कश्मीर में विधान सभा की स्थापना भारत की सभी रियासतों में प्रथम थी। इस पर अन्य राज्यों में आश्चर्य भी व्यक्त किया गया था। लोगों के प्रतिनिधि चुनाव लड़कर प्रजा सभा में आ गये थे। फिर भी इस का विरोध होता रहा। महाराजा ने 1943 में घोषणा की कि प्रजा सभा में से दो सदस्य मंत्रिमण्डल में लिए जाएंगे जो स्वायत शासन के लिए प्रथम पग था। इस पर, कश्मीर में नैशनल कांफ्रैंस के नेता मिर्ज़ा अफज़ल बेग को और जम्मू में वज़ीर गंगा राम को मंत्रिमण्डल में सम्मिलिति कर लिया गया। अन्य कारनामों के अलावा महाराजा हरि सिंह ने दूसरी गोलमेज़ कांफ्रेंस में भी 'भारत की स्वतत्रंता' का पक्ष रखा था।

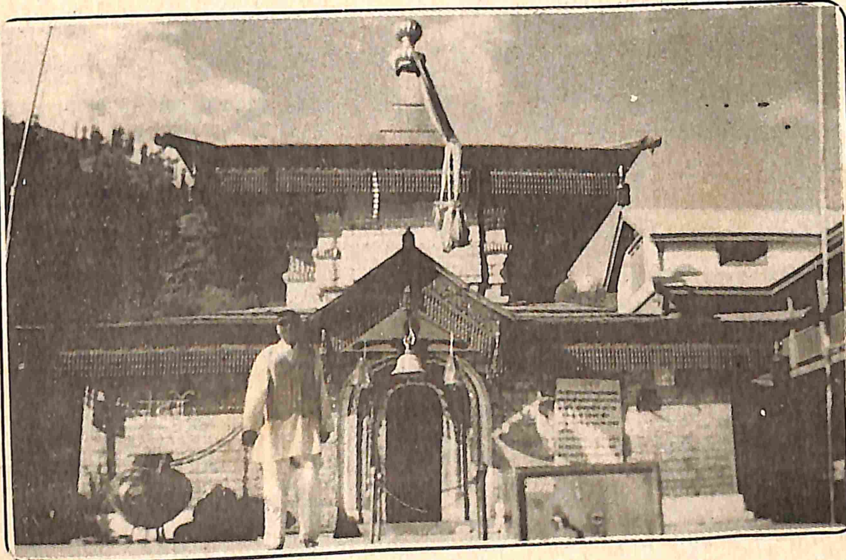
□ *जुल्लाका मोहल्ला,*
जैन बाजार, जम्मू-1

संस्मरण

एक अविस्मरणीय हाटकोटी यात्रा

☐ डॉ० बी० एन० कल्ला

हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, शिमला के पूर्व सचिव तथा राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भूपाल के परियोजना समन्वयक डॉ० बंशीलाल शर्मा से 24-10-97 को जम्मू के संकेत पर मुझे पत्र मिला। पत्र का विषय इस प्रकार था - "इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय" भोपाल (म० प्र०) के तत्त्वावधान में हाटकोटी ज़िला शिमला में दिनांक 13 नवम्बर, 1997 से 20 नवम्बर, 1997 की अवधि में निम्नलिखित विषयों पर दो कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। स्थानीय लिपियों तथा प्राचीन भाषाओं एवं जनजातीय भाषाओं में लेखन। काष्ठ शिल्पकारों का शिविर तथा कार्यशाला। इसमें भाग लेने के लिए सांचा विद्या, टाकरी, शारदा जनजातीय भाषाओं तथा दुर्लभ पाण्डुलिपियों के अनुवादकों तथा विशेषज्ञों को सहयोजित किया जाएगा।



यह पत्र पढ़कर मुझे हाटकोटी जाने की इच्छा हुई। आठ साल से कश्मीर से विस्थापित होने के बाद मैं गगनचुम्बी हिमाच्छादित चोटियों को पुनः देखना चाहता था अतः मैंने तत्काल कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए अपनी अनुमति भेज दी। मेरे साथ जम्मू से डॉ० मधुकर मारवा भी था। कार्यक्रम के अनुसार मैं ने जम्मू से दस नवम्बर 1997 को सांय आठ बजे डीलक्स बस से हाटकोटी के लिए प्रस्थान किया। 11 नवम्बर को सांय मैं शिमला पहुंचा। शिमला में 'अकादमी' के कार्यालय में ठहरने के लिए व्यवस्था की गई थी। 'अकादमी' का कार्यालय पहाड़ी पर स्थित है। यहां तक पहुंचने में काफी चढ़ाई है। चढ़ते चढ़ते मेरा सांस भी फूल गया। अन्ततः मैं अपने मित्र के साथ सांय नौ बजे वहां पहुंचा। अकादमी का चौकीदार मतिराम मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने मुझे एक कमरे में बिठाया। कमरा बहुत सर्द था, उसने अंगीठी जलाई, मेरी सर्दी इससे कम होने लगी। आठ साल के बाद मुझे नवम्बर की शीत काफी महसूस होने लगी। कमरे की खिड़कियां बन्द थीं। उनमें शीशे लगे हुए थे। शीशों से मैंने झांका, वहां साथ की पहाड़ी पर बर्फ पड़ी हुई थी। उसे देखकर मुझे हर्ष हुआ। ऐसा मालूम हुआ कि मैं श्रीनगर में अपने घर के चौथे मंज़िल पर बैठकर शंकराचार्य की बर्फानी पहाड़ी का दृष्य देख रहा हूं। दो-तीन क्षण टकटकी बांधकर उसकी ओर देखने लगा। कश्मीर के अतीत मधुर क्षण याद आ गये। आखिरकार गर्म पानी से नहाकर मैंने खाना खाया और सो गया। दूसरे दिन प्रातः उठकर श्री मति राम ने नाश्ता तैयार किया। अपना नित्यनियम तथा नाश्ता करके मैं 'हाटकोटी' जाने के लिए तैयार हुआ। मति राम मेरे साथ 'बस स्टैंड' तक आ गये। मेरी 'अटैची' उठाकर उसने मुझे बारह बजे के करीब बस में बिठाया। सांय 5 बजे मैं हाटकोटी पहुंचा। हाटकोटी की सड़क से नीचे उतर कर मुझे लगभग दो फर्लांग तक पैदल जाना पड़ा।

वहां डॉ० वंशी राम, राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भूपाल के संग्रहालयाध्यक्ष (Curator) श्री सोम नाथ जी तथा हिमाचल प्रदेश के जाने माने प्रो० अरुण जी आदि महान विभूतियां पहले ही पहुंची हुई थीं। हाटकोटी की बड़ी धर्मशाला में आगन्तुकों के

लिए आवास आदि की व्यवस्था की गई थी। डॉ० वंशी राम आदि महानुभावों से वहां मुझे पहली भेंट हुई। वंशी राम ने हालचाल पूछ कर मुझे एक कमरे की चाबी दी और वहां ठहरने के लिए कहा। मुझे देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि उन्होंने 'कोरियर' द्वारा भी कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए मुझे अनुरोध किया था। उस दिन दिल्ली, भूपाल, हिमाचल प्रदेश आदि से बहुत निमंत्रित विद्वान आये थे। उनसे परिचय हुआ।

हाटकोटी में उतनी ठंड नहीं थी जितनी शिमला में। उसका मुख्य कारण यह है कि हाटकोटी पहाड़ियों से घिरा हुआ है। प्रकृति की गोद में स्थित यह स्थान चषक के समान प्रतीत होता है। प्राकृतिक सम्पदा से आवृत इसी क्षेत्र में कार्यशाला का आयोजन था। धन्य है यह भूखण्ड। धन्य है इसके आयोजक जिन्होंने इस कार्यशाला के लिए इस स्थान को चुना था। हाटकोटी रोहड़ मार्ग पर शिमला से 80 किलो मीटर के लगभग दूरी पर स्थित है। यह पहाड़ी मार्ग है। इसकी सड़क बीच-बीच में तंग है। कश्मीर की तरह यह पहाड़ी रास्ता है। दूसरे दिन यानी 13 नव० को नाश्ता करके मैं कार्यक्रम के अनुसार कार्यशाला में गया। प्रातः नौ बजे से सांय छः बजे तक आमंत्रित लिपिविशेषज्ञों, काष्ठ शिल्पकारों तथा कलाकारों को सग्रंहलय की ओर से काम सौंपा गया। बीच में मध्याह्नभोज (Lunch) के लिए एक से दो बजे का समय रखा गया था। मुझे रत्नमाला नामक एक पाण्डुलिपि का लिप्यकरण नागरी में करने के लिए कहा गया। यह पाण्डुलिपि दो लिपियों - शारदा तथा टाकरी में लिखी गई है। यह ज्योतिष की भट्टपाद विरचित पाण्डुलिपि है। इसका गम्भीर अध्ययन करने के बाद मालूम होता है कि यह भट्टपाद कश्मीर का निवासी होना चाहिए। इसके मंगलाचरण में शारदा देवी का श्लोक भी मिलता है। कश्मीर शारदा देवी का प्रतिष्ठत पीठ माना जाता है। भट्ट कल्लट की तरह यह रचनाकार कश्मीर का ही सिद्ध होता है। ऐसी मेरी धारणा है। इसमें-मुहूर्तप्रकरण, जातक मिलाप, सारणी, नक्षत्र विचार, नाड़ीदोष विचार, शकुन विचार आदि विषयों पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डाला गया है। टाकरी लिपि में लिखित अक्षरों को पढ़ने में जहां मुझे कठिनाई आती थी। वहां मैं टाकरी लिपि के विशेषज्ञों के पास जाकर उनसे वह अक्षर अथवा वाक्य पढ़वाता था। इससे मुझे इस पाण्डुलिपि के लिप्यन्तरण में कोई बाधा नहीं आई। मेरे मतानुसार शारदा लिपि से ही गुरुमुखी लिपि तथा टाकरी लिपि का विकास हुआ है। टाकरी की वर्णमाला में केवल पांच छः वर्णों में विषमता पाई जाती है। शेष वर्ण शारदा लिपि के समान है। अंत में इसकी रिपोर्ट लिखकर डॉ० वंशी लाल जी को दी। समयाभाव के कारण इसकी पूरी पाण्डुलिपि का लिप्यन्तरण हम न कर सके।

इस कार्यशाला में मुख्य आकर्षण 'सांचाविद्या' की प्रदर्शनी थी। 'सांचाविद्या' मेरे लिए एक नया विषय था। वहां के स्थानीय कर्मकांडी ब्राह्मणों ने मुझे कहा कि यह 'सांचाविद्या' कश्मीर से आई हुई है। उसे यह 'कश्मीरी विद्या' भी बताते हैं। 'सांचाविद्या' ज्योतिष की एक शाखा है जिसमें 'रमल' का आश्रय लिया जाता है। रमल विद्या में पासा डालकर ज्योतिष के आधार पर प्रश्नों के उत्तर देने की परम्परा है। यह 'सांचाविद्या' कश्मीर से आई हुई है और अभी तक पाबुची, भटाक्षरी आदि प्राचीन लिपियों में लिखे गए इसके अनेक ग्रन्थ हिमाचल प्रदेश के अनेक क्षेत्रों - सिरमौर, शिमला, सोलन तथा उत्तर प्रदेश के जांखर में पाये जाते हैं। पाबुची का शाब्दिक अर्थ है। पाप से बचना। इस लिपि का विकास विक्रम संवत् 1152 तदनुसार ईस्वी सन् 1055 में हुआ। खंड़काह के पण्ड़ितों के पास ये प्राचीन ग्रन्थ पाये जाते हैं। परम्परागत अहर्गण पंचाङ के चालक पं० देवी राम ज्योतिषाचार्य के पास पाबुची अथवा सांचाविद्या के ग्रन्थ पाये जाते हैं। सांचाविद्या यंत्र तंत्र तथा मंत्रों पर आधारित है। सांचाविद्या की एक पाण्डुलिपि वहां मैंने खोली, उसके ऊपर चमड़े का जिल्द चढ़ा हुआ था। खोलकर मैंने उसमें अनेक यंत्रों के 'डायग्राम' देखे। इसके विषय में जब मैंने देवी राम से प्रश्न पूछा तो उसने जवाब दिया कि हम अपने गांव में लोगों को ये यंत्र लिखकर देते हैं जिनसे उनका शारीरिक कष्ट आदि मिट जाता है। इस पुस्तक में अनेक रोगों के यंत्र पाये जाते हैं। उनका उपचार यंत्रों तथा मंत्रों द्वारा किया जाता है। इसके अतिरिक्त यदि किसी के मन में कोई प्रश्न हो तो पासा पुस्तक पर डालकर किया जाता है। मेरे मन में भी विचार पैदा हुआ कि मैं भी पासा के द्वारा अपना भविष्य जांनू। मैंने गुरू जी से कहा, मेरे प्रश्न का उत्तर दीजिए। गुरू जी ने सांचाविद्या पर पासा डाल दिया और उसके अंकों के अनुसार पोथी खोल दी। पढ़कर मेरे प्रश्न का उत्तर दिया कि आपका काम ज़रूर होगा लेकिन इसमें छः सात महीने लग जायेंगे। सांचा सम्बन्धी जानकारी से मुझे अपने पूज्यपाद पिता स्वर्गीय पं० विदलाल जी की बात याद आ गई। उन्होंने बचपन में मुझे रमलविद्या के बारे में कहा था जिसका स्मरण मुझे हाटकोटी में हुआ। रमलविद्या तथा तंत्र विद्या के माहिर कश्मीर में रहते थे। प्राचीनकाल में कश्मीर तंत्र विद्या का प्रतिष्ठित पीठ माना जाता था। यहां से ही यह विद्या लद्दाख तिब्बत तथा ईरान तक पहुंच गई जिसके ज्वलन्त उदाहरण लद्दाख तथा तिब्बत के गुम्फाओं में पाये जाते हैं। ईरान के शिया लोगों पर भी इसका

प्रभाव किसी न किसी रूप में नज़र आता है। कश्मीर में शिया लोग इस समय भी तंत्र विद्या का प्रयोग करते है और तावीज़ भी देते हैं। यहां पर यह बात ध्यान देने के योग्य है कि कश्मीर के मुसलमानों में एक जाति 'तांत्रे' है। पुराने ज़माने में वे तंत्र विद्या में निपुण थे। इस समय ये लोग जाति से ही तांत्रे हैं। 'तांत्रे' तांत्रिक शब्द का बिगड़ा हुआ रूप है ऐसी मेरी धारणा है। कश्मीर में कुछ साल पहले तंत्र विद्या तथा रमलविद्या के माहिर बहुत पण्डित थे। उनमें पं० नित्यानन्द ज्योतिषी तथा पं० जगन्नाथ शाला ने भारत में अपनी छवि बनाई थी। पं० जगन्नाथ शाला का निधन विस्थापित होने बाद जम्मू में हुआ। मुझे इस बात का दु:ख है कि इस कार्यशाला में उनकी विद्या का उपयोग न हो पाया।

सांचाविद्या के साथ जुड़े हुए एक तथ्य का अनावरण करन यहां मैं प्रासंगिक समझता हूं। कश्मीर के लोगों को यह मालूम है कि श्रीनगर में स्थित 'बोहरी कदल' कर्मकाण्डी ब्राह्मणों का केन्द्र था। वहां कुछ घराने बृहस्कथा अथवा बृहत्कथा के आधार पर प्रार्थी की शंकाओं अथवा प्रश्नों का समाधान करते थे। वहां प्रश्न के समय पासे का प्रयोग नहीं किया जाता था। प्रश्नकर्ता पण्ड़ित के सामने बृहस्कथा की पोथी खोलता था। पण्ड़ित जी उस पृष्ठ के अनुसार उसे फलादेश बताता था। इस तरह यह परम्परा कश्मीर में चिरकाल से चलती थी। इस पुस्तक की भाषा संस्कृत है और इसकी लिपि शारदा। इन कर्मकांड़ी ब्राह्मणों में 'बोहरी कदल' का श्री कण्ठ बहुत प्रसिद्ध था। हाय ! विस्थापित होने के बाद ये पण्डित कहां गये। इसका अतापता मुझे अभी तक नहीं है। सचमुच कश्मीर में आतंकवाद के बाद भारतीय संस्कृति अथवा कश्मीरियत को काफी धक्का लगा। अभी भी ज़रूरत है कि हम पूर्वजों की इस थाती को सुरक्षित रखें।

सांचाविद्या के पण्डितों के अनुसार यह विद्या कश्मीर से आई है। यह ऐतिहासिक तथ्य जोनराज तथा श्रीवर की राजतरंगणियों से स्पष्ट होता है। मध्यकाल में कश्मीर में मुसलमानों की अमानवीय यातनाओं से त्रस्त होकर लाखों की संख्या में हिन्दु लोग अपनी मातृभूमि छोड़कर भारत के विभिन्न राज्यों में बस गये। अनुकूल जलवायु के कारण वे अधिकतर हिमाचल प्रदेश में बस गये। विषम परिस्थितियों के कारण कश्मीरी ब्राह्मण अपनी चल अचलसम्पति छोड़कर पुस्तकें लेकर वहां से भाग गये। राजतरंगणी में इसका वर्णन इस प्रकार है :

'तस्मिन् काले बुधा:सर्वे, मौसुलोपद्रवाज्जवात्।
गृहीत्वा पुस्तकान् सर्वान् ययुर्देशं दिगन्तरम्।।'

अर्थ : उस समय कुछ स्थानीय लोगों के उपद्रव के कारण कश्मीरी विद्वान पुस्तकें लेकर दूसरे प्रदेशों में चले गये। इस साक्ष्य के आधार पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यह सांचाविद्या 'बृहस्कथा' का ही विकसित रूप है। बृहस्कथा में कालान्तर स्थानभेद के कारण कुछ मौलिक परिवर्तन हुआ होगा। क्योंकि दोनों पुस्तकों में कुछ विषयों में साम्य पाया जाता है। इस विषय पर अभी शोध करने की आवश्यकता है। इस विद्या के प्राय: बीस पण्डितों ने कार्यशाला में भाग लिया।

13 नवम्बर को प्रात: उठकर मैं हाटेश्वरी का मन्दिर देखने के लिए चला गया। हाटेश्वरी मन्दिर प्राय: कार्यशाला से एक फर्लांग दूर था। विशाल प्रांगण में दिव्य मन्दिर को देखकर मैं आश्चर्य चकित हुआ। मन्दिर में हाटेश्वरी की एक सांगोपांग विशाल शिला की काली मूर्ति है। इस देवी ने चरणों के नीचे एक असुर को दबोच कर रखा है। यह देखकर मुझे ऐसा मालूम हुआ कि यह मूर्ति चण्ड़ी का ही एक रूप है। हमारे कश्मीर में हाटकेश्वर नामक भैरव हैं। पूजा करते समय नैवेद्यमंत्र में उसका नाम हम लेते हैं। लेकिन यहां यह भैरव नहीं है यह हाटकेश्वरी देवी है। वहां पुजारी को मैंने इस मन्दिर के बारे में पूछा, उसने मुझे कहा कि यह मन्दिर अज्ञातवास के समय पाण्डवों ने बनाया था। तब से इसकी प्रसिद्धि सारे देश में फैल गई और यात्री हज़ारों वर्षों से दर्शनार्थ आते रहते हैं। मन्दिर की शिलायें बहुत चौड़ी तथा आकर्षक हैं। इस मन्दिर के अन्दर देवी देवताओं की छोटी शिलाओं की मूर्तियां भी हैं। मन्दिर की छत का निर्माण आधुनिक शिल्पकारों ने बड़े कष्ठ से किया है। इस छत की सुन्दर कारीगरी यात्रियों को आकर्षित करती है। मन्दिर में प्रवेश करते समय प्रस्तर द्वार के ऊपर गणेश जी की उभरी हुई मूर्ति सिन्दूर से रंजित है। इसकी परिक्रमा करते समय छोटे - छोटे ताकों में नव ग्रहों की छोटी - छोटी मूर्तियां नज़र आती हैं। मन्दिर के अन्दर दो शिलालेख हैं जो ब्राह्मी तथा शारदा लिपियों में है। इन शिलालेखों का लिप्यन्तरण करने कि लिए डॉ० वंशीराम शर्मा ने मुझे कहा। इनका चित्र वहां के पुजारी ने उसे दिया था। मन्दिर से निकलते समय वन विभाग के 'कैमरामैन पाल महोदय' ने मेरी तस्वीर खींची जो बाद में उन्होंने मुझे जम्मू के संकेत पर भेज दी। इस कैमरामैन से मेरा परिचय कार्यशाला में हुआ था। जम्मू के श्री बालकृष्ण नागर (अवकाश प्राप्त म्यूनिसपल अधिकारी) के कथानुसार 'हाटेश्वर' का मन्दिर गुजरात के वड़नगर में स्थित है जिसका वर्णन 'स्कन्द पुराण' के नागरखंड में मिलता है। ये मन्दिर गुजरात के

अतिरिक्त अन्य प्राणों में भी पाये जाते हैं। यह नागर ब्रह्मणों के इष्टदेव हैं।

कार्यशाला में हिमाचल की प्राचीन पाण्डुलिपियों की प्रदर्शनी का आयोजन भी था। टेवे के रूप में वहां मैंने टाकरी में 'रामचरितमानस' की एक पाण्डुलिपि देखी। मैंने भी अपने निजी संग्रह से शारदा में लिखित शैवदर्शन सम्बन्धी कुछ पाण्डुलिपियां तथा कश्मीरी साहित्य सम्बंधी प्राचीन पुस्तकें वहां प्रदर्शित कीं। इन पाण्डुलिपियों के प्रदर्शन के लिए डॉ० वंशी लाल ने आग्रह किया था। इनमें उत्पलदेव की शिवस्तोत्रावली, ईश्वरप्रत्यभिज्ञा विमर्शिनी, स्तवचिन्तामणि, महानयप्रकाश, लल्लावाक्यानि आदि उल्लेखनीय हैं।

शारदा तथा टाकरी लिपि विशेषज्ञों के अतिरिक्त चंदवाणी आदि लिपियों के विशेषज्ञ भी इसमें सम्मिलित हुए थे। यह चंदवाणी लिपि हिमाचल प्रदेश के तहसील चोपाल आदि में तथा उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में अनोल, कोटी आदि में प्रचलित है। इसके विशेषज्ञ तहसील चोपाल के मध्य 'भटेपड़ी' स्थान के पास पण्डितों के गांव में रहते हैं। कुल्लू से पं० खूबराम खुशहाल आया था जो इस लिपि का विशेषज्ञ माना जाता है। चंदवाणी लिपि 16वीं सदी की मानी जाती है। इसके अतिरिक्त किन्नोर आदि क्षेत्रों से काष्ठ शिल्पकारों तथा मूर्तिकारों को भी इस कार्यशाला में बुलाया गया था। उनको भी आठ दिन के लिए भिन्न - भिन्न काम सौंपा गया था। कार्यशाला के बाहर काष्ठशिल्पकारों ने एक काष्ठ का तोरण (ड्योढ़ी) बनाया। इसके तीनों तरफ यानि तिकोन आकार में उन्होंने देवी देवताओं की मूर्तियां बनाई। उनमें गणेश जी की मूर्ति सर्वोपरि बनाई थी। शेषनाग की काष्ठ निर्मित मूर्ति बहुत ही सुन्दर थी। इसी तरह दूसरे काष्ट शिल्पकार ने देवदारू लकड़ी की वीणा बनाई। इसका मूल्य उसने मुझे तीन हज़ार बताया। कांस्यमूर्तिकारों ने वहां विभिन्न मूर्तियां बनाई। उनमें शिव जी की मूर्ति बहुत ही आकर्षक थी।

कार्यशाला का काम समाप्त करके मैं श्याम को भ्रमण करने के लिए जाता था। एक बार हाटेश्वरी की धर्मशाला से आगे चालीस पच्चास क़दम चलकर बाईं ओर पहाड़ी के ऊपर एक विशाल गुफा मैंने देखी है। उसमें वहां एक महन्त रहता था। उस गुफा के नीचे एक निर्मल नदी बहती है। उसका नाम 'पबर' है। कहा जाता है कि इस पर्वत पर पार्वती ने शिव को प्राप्त करने के लिए तपस्या की थी। इसलिए इस नदी का नाम 'पबर' है। मेरे विचार से 'पबर' पार्वती का बिगड़ा हुआ रूप है। वहां अन्य पहाड़ी विराट नगर से प्रसिद्ध है। यह महाभारत कालीन पर्वत है जहां पाण्डव विराट के नगर में अज्ञातवास के समय रहते थे। इस प्रकार की दन्तकथायें वहां बहुत प्रचलित हैं।

समापन समारोह के एक दिन पहले मैंने शिलालेखों का लिप्यन्तरण करके डॉ० वंशीराम को दिया। एक शिलालेख का नागरी लिप्यन्तरण इस प्रकार है :- 'दहिल पुर पद्मनामन (य) राघव हर्षवर्धन।' यह ब्राह्मी तथा शारदा में है। मेरे मतानुसार यह 7वीं अथवा 8वीं शती का है। दूसरे शिलालेख में बीजमंत्र -ओं ह्रीं श्रीं ल्कीं आदि है।

बीस नवम्बर 97 को तीन बजे से सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। इसमें हिमाचल के प्रतिष्ठित नागरिकों तथा विद्वानों को आमंत्रित किया गया था। सबसे पहले डॉ० वंशी राम जी ने कार्यशाला के महत्त्व पर प्रकाश डाला। इसके बाद भूपाल संग्रहालय के अध्यक्ष श्री सोमनाथ जी ने संग्रहालय के विविध विषयों की जानकारी दी तथा देश के विभिन्न राज्यों में आयोजित कार्यक्रमों का व्यौरा विस्तृत रूप से दिया। स्थानीय विद्वानों ने भी कार्यशाला की प्रशंसा की। अंत में मैंने भी शारदापीठ की साहित्यिक सम्पदा का वर्णन करके इस कार्यशाला के बारे में अपने सुझाव इस प्रकार दिये:-

1. सांचा विद्या के प्रतिष्ठित पण्डितों को ये पाण्डुलिपियां सुरक्षित रखने के लिए उत्साहवर्धन करना चाहिए। उन्हें प्रतिमास मानदेय देना चाहिए।
2. टाकरी आदि लिपियों में उपलब्ध पाण्डुलिपियों का नागरी में लिप्यन्तरण करना भी ज़रूरी है। इससे इन पाण्डुलिपियों में छिपा हुआ ज्ञान सर्वसाधारण तक पहुंच जायेगा तथा शोधकों के लिए एक नया मार्ग प्रशस्त करेगा।
3. इन पाण्डुलिपियों को 'मैकरो फिल्म' द्वारा सुरक्षित रखना चाहिए।

इसी दिन विभिन्न लिपिविशेषज्ञों ने वर्णमालाओं के चार्ट लिख कर संग्रहालय के अध्यक्ष को दिये। कार्यशाला में किया गया सारा काम संग्रहालय के अध्यक्ष ने अपने साथ भूपाल ले लिया।

निसन्देह, हाटकोटी सत्यं, शिवं तथा सुन्दरम् का प्रतीक है। तभी तो कविसम्राट कालिदास ने हिमालय का वर्णन अपनी अमर रचनाओं में किया है। इसकी अमिट छाप मेरे मन में हमेशा रहेगी।

□ *संस्कृत प्राध्यापक,*
57/8 त्रिकुटा नगर, जम्मू 180002

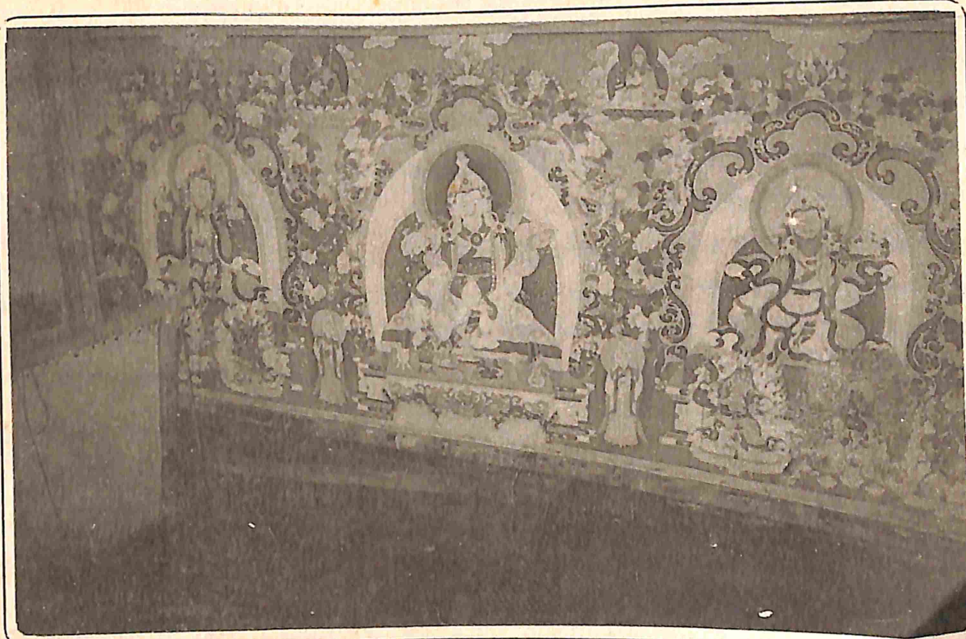
इतिहास

थंका चित्रकला

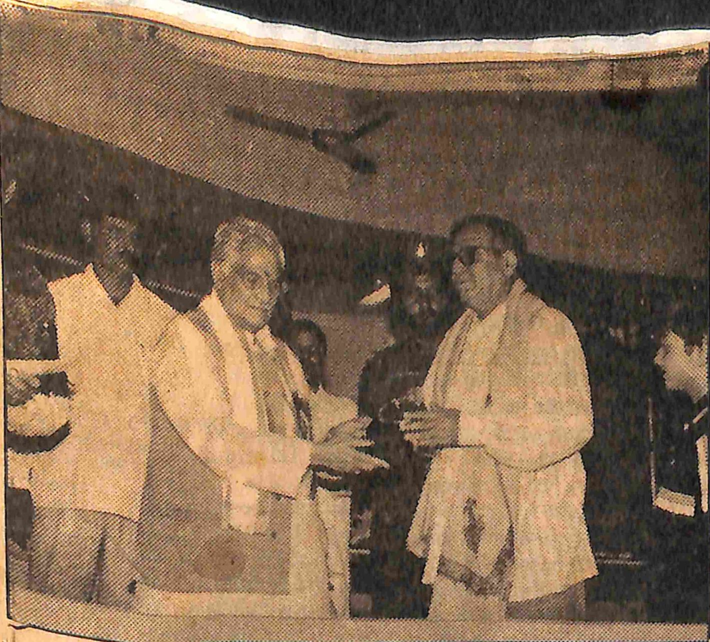
□ डॉ० अशोक जेरथ

थंका तस्वीरें वस्तुतः कपड़े पर बनाई जाने वाली बुद्धमत के दर्शन एवं उसके प्रचार को दर्शाती तस्वीरें होती हैं जिन्हें 'रोल' कर रखा जाता है। लगभग हर बौद्धमठ, जिसे गोम्पा की संज्ञा दी जाती है, में ऐसे अनेक थंका होते हैं जिन्हें समय-समय पर जनसाधारण के सामने खोला जाता है।

थंका चित्रकला का इतिहास बहुत पुराना है। यद्यपि इस चित्रकला के उद्भव में अनेक सिद्धांत प्रतिपादित किए जाते हैं पर यह सर्वविदित तथ्य है कि 'थंका चित्रकला' भारत से विभिन्न देशों में पहुंची। और भारत में वस्त्र के फलक पर बनाए जाने वाले चित्रों का प्रचलन महात्मा बुद्ध के जीवन काल से ही हो चुका था। प्राचीन भारत में उस समय दो राज्यों के सम्राट उत्यायन और बिम्बिसार एक दूसरे के परम मित्र थे। ये दोनों राज्य वर्तमान बिहार के क्षेत्र में स्थित थे। दोनों सम्राट एक दूसरे को तोहफे देते थे और एक दूसरे के लिए बढ़चढ़ कर कुछ करने के लिए तत्पर रहते। एक बार उत्यायन ने बिम्बिसार को कुछ बेशक कीमती हीरे-जवाहरात भेंट में भेजे जिनका मूल्य निर्धारित नहीं किया जा सकता था। बिम्बिसार भी उत्यायन को कुछ ऐसी ही भेंट देना चाहता था। जो अमूल्य हो पर वह सोच-सोच कर परेशान रहने लगा कि ऐसी कौन सी भेंट हो सकती है। सभी मंत्रियों ने अपनी समझ के अनुसार सुझाव दिया पर राजा की चिंता दूर नहीं हुई कि उसके अमात्य ने एक प्रबल सुझाव दिया कि राज्य में एक से एक बढ़कर चित्रकार हैं क्यों नहीं महात्मा बुद्ध की तस्वीर सुनहरे रंगों में बनाकर भेजी जाए। चूंकि उत्यायन भी महात्मा बुद्ध का अन्यतम भक्त था अतः निश्चय ही उसके लिए बुद्ध की तस्वीर से कीमती और क्या भेंट हो सकती थी। बिम्बिसार को सुझाव भा गया। तुरंत वह महात्मा बुद्ध की सेवा में उपस्थित हुआ और प्रार्थना की कि वह चाहता है कि उसके चित्रकार महात्मा का चित्र अंकित करें। महात्मा बुद्ध के सहमत होने पर सम्राट ने अपने चुनींदा चित्रकार महात्मा बुद्ध की सेवा में भेज दिए।



इन चित्रकारों ने बहुत प्रयास किया पर जब भी तूलिका थाम कर महात्मा बुद्ध की तस्वीर बनानी चाही तो अचानक चारों ओर रोशनी का पुंज फैलाकर उन्हें चकाचौंध कर देता। कई दिन हो गए पर वह कुछ भी नहीं कर सके तो एक दिन महात्मा बुद्ध को अकेला पाकर वे उनके आगे नतमस्तक होकर प्रार्थना करने लगे कि उन्हें महात्मा अपना आशीर्वाद दें ताकि वे अपना कार्य पूरा कर सकें तो महात्मा बुद्ध हंस पडे और उन्हें साथ लेकर एक सरोवर के किनारे पहुंचे और बोले कि प्रत्यक्ष में वे कभी भी उनका चित्र बनाने में समर्थ नहीं होंगे अपितु जल में उभर रहे महात्मा के प्रतिबिम्ब को वे



Union Minister of Human Resource and Development, Dr Murli Manohar Joshi presenting award to Dr B N Kalla at a function held in New Delhi recently.

Dr Joshi felicitates Dr Kalla

Excelsior Correspondent

JAMMU, Apr 18: Union Minister for Human Resource and Development, Dr Murli Manohar Joshi has felicitated Dr B N Kalla a renowned Sanskrit scholar from Kashmir valley for his outstanding contribution towards the upliftment of Sanskrit language and literature.

Dr Kalla was presented the award by Dr Joshi at All India Sanskrit Teachers Conference which was held in Union Capital last month. The award contains a cash prize of Rs 10,00 along with a memento and a Shawl.

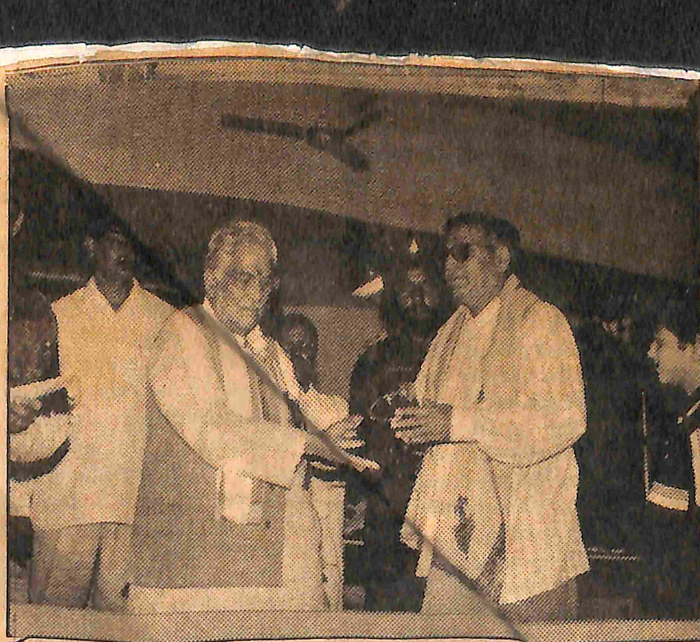
The conference was organised by Rashtriya Sanskrit Sansthan in collaboration with the Ministry of Human Resource and Development Education Department, Government of India.

Dr Kalla who was inspired by Prof. Ghulam Nabi Shayaq in 1961 has been contributing towards Sanskrit language and literature for the last four decades.

He also prepared a paper in Sanskrit on Kashmiri language and read it in linguistic Section of All India Oriental Conference held at Srinagar in 1961 and since then he attended a number of different sessions of All Oriental Conferences held in Calcutta, Ujjain, Allahabad, Vishakhapatnam, Haridwar, Dharwar, Jaipur and Delhi and presented his papers in Sanskrit and Hindi.

Dr Kalla has submitted three major projects of UGC after his retirement from Kashmir University and the title of these projects was historical, etymological and topographical description of Vitasta Mahatmya with comprehensive introduction and detailed annotations.

Dr Kalla has vast research experience as an editor in Kashmir dictionary section where he gave etymology of 40.000 words of Kashmiri derived from Sanskrit, Prakrit, Persian, Arabic and Turkish languages in seven volumes of Kashmiri dictionary published by J&K Cultural Academy.



Union Minister of Human Resource and Development, Dr Murli Manohar Joshi presenting award to Dr B N Kalla at a function held in New Delhi recently.

Dr Joshi felicitates Dr Kalla

Excelsior Correspondent

JAMMU, Apr 18: Union Minister for Human Resource and Development, Dr Murli Manohar Joshi has felicitated Dr B N Kalla a renowned Sanskrit scholar from Kashmir valley for his outstanding contribution towards the upliftment of Sanskrit language and literature.

Dr Kalla was presented the award by Dr Joshi at All India Sanskrit Teachers Conference which was held in Union Capital last month. The award contains a cash prize of Rs 10,00 along with a memento and a Shawl.

The conference was organised by Rashtriya Sanskrit Sansthan in collaboration with the Ministry of Human Resource and Development Education Department, Government of India.

Dr Kalla who was inspired by Prof. Ghulam Nabi Shayaq in 1961 has been contributing towards Sanskrit language and literature for the last four decades.

He also prepared a paper in Sanskrit on Kashmiri language and read it in linguistic Section of All India Oriental Conference held at Srinagar in 1961 and since then he attended a number of different sessions of All Oriental Conferences held in Calcutta, Ujjain, Allahabad, Vishakhapatnam, Haridwar, Dharwar, Jaipur and Delhi and presented his papers in Sanskrit and Hindi.

Dr Kalla has submitted three major projects of UGC after his retirement from Kashmir University and the title of these projects was historical, etymological and topographical description of Vitasta Mahatmya with comprehensive introduction and detailed annotations.

Dr Kalla has vast research experience as an editor in Kashmir dictionary section where he gave etymology of 40.000 words of Kashmiri derived from Sanskrit, Prakrit, Persian, Arabic and Turkish languages in seven volumes of Kashmiri dictionary published by J&K Cultural Academy.



Union Minister of Human Resource and Development, Dr Murli Manohar Joshi presenting award to Dr B N Kalla at a function held in New Delhi recently.

Dr Joshi felicitates Dr Kalla

Excelsior Correspondent

JAMMU, Apr 18: Union Minister for Human Resource and Development, Dr Murli Manohar Joshi has felicitated Dr B N Kalla a renowned Sanskrit scholar from Kashmir valley for his outstanding contribution towards the upliftment of Sanskrit language and literature.

Dr Kalla was presented the award by Dr Joshi at All India Sanskrit Teachers Conference which was held in Union Capital last month. The award contains a cash prize of Rs 10,00 along with a memento and a Shawl.

The conference was organised by Rashtriya Sanskrit Sansthan in collaboration with the Ministry of Human Resource and Development Education Department, Government of India.

Dr Kalla who was inspired by Prof. Ghulam Nabi Shayaq in 1961 has been contributing towards Sanskrit language and literature for the last four decades.

He also prepared a paper in Sanskrit on Kashmiri language and read it in linguistic Section of All India Oriental Conference held at Srinagar in 1961 and since then he attended a number of different sessions of All Oriental Conferences held in Calcutta, Ujjain, Allahabad, Vishakhapatnam, Haridwar, Dharwar, Jaipur and Delhi and presented his papers in Sanskrit and Hindi.

Dr Kalla has submitted three major projects of UGC after his retirement from Kashmir University and the title of these projects was historical, etymological and topographical description of Vitasta Mahatmya with comprehensive introduction and detailed annotations.

Dr Kalla has vast research experience as an editor in Kashmir dictionary section where he gave etymology of 40.000 words of Kashmiri derived from Sanskrit, Prakrit, Persian, Arabic and Turkish languages in seven volumes of Kashmiri dictionary published by J&K Cultural Academy.